www.thearyasamaj.org

# वैदिक ज्योति

वर्ष 17 जून 2012

## आर्य सेवा संघ, महू

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org



# श्रद्धा से पुण्य और अन्ध श्रद्धा से पाप होता है!

– प्रकाश आर्य, महू

**प्रिय पाठकवृन्द इसके पूर्व आपने तीर्थ के संबंध में, जल के स्थान पर सही तीर्थ के विचारों को पढ़ा अब एक और महत्वपूर्ण विषय पर यहां चर्चा की जा रही है। कृपया पढ़ें, समझे व सत्य को ग्रहण करें।**

हमारे दैनिक जीवन में कभी–कभी कुछ ऐसे शब्द प्रचलन में आ जाते हैं जिनका उपयोग हम जिस भावना से करते हैं, उनका वास्तविक अर्थ कुछ और ही होता है।

जैसे कोई व्यक्ति गेहूं लेकर उसका आटा पिसवाने जा रहा है, किसी ने पूछा कहां जा रहे हो ? प्रायः उसका उत्तर होता है, आटा पिसवाने। जबकि वह आटा नहीं गेहूं पिसवाने जा रहा है। किन्तु रात दिन के बोलने में आटा ही प्रचलन में आ गया। नल में पानी आता है जो पाईप लाईन से आता है लेकिन बोला जाता है कि नल आ गए। कार या स्कूटर का टायर पंक्चर होता है लेकिन कहने में आता है कि कार, स्कूटर पंक्चर हो गया है। कई स्थानों पर किसी को ठण्ड लग रही है तो वहां बोला जाता है कि ठण्ड बज रही है, बजना शब्द किसी ध्वनि करने से संबंध रखता है किन्तु ठण्ड लगने को ठण्ड बज रही है कहने का भी प्रचलन है जो उसके मूल अर्थ से भिन्न है। ऐसे कई उदाहरण हमें सुनने को मिलते हैं।

ठीक इसी प्रकार श्रद्धा शब्द का भी प्रयोग जन साधारण के मध्य प्रचलित हो गया है, हर किसी आस्था, भावना मानसिक लगाव को इसेसे जोड़ दिया है। श्रद्धा जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो जीवन प्रगति, और वांछित षुभ संकल्पों की पूर्ति करता है। बिना श्रद्धा के जीवन निरर्थक है क्योंकि श्रद्धा के संबंध में कहा **श्रृध्ययया विन्दते** वसु। अर्थात् श्रद्धा से अभिष्ट (षुभ कामनाओं की) की प्राप्ति होती है। महाभारत में श्रद्धा का बड़ा महत्व बताया गया है, कहा गया हैं

www.thearyasamaj.org

**अश्रद्धा परमं पापं, श्रद्धा पापं प्रमोचिनी।**
**जहति पापं श्रद्धावान सर्पो जीर्णामिव त्वचम्।**

अर्थात् – जीवन में श्रद्धा का न होना महा पाप है क्योंकि श्रद्धा पाप का नाश करती है। जिस प्रकार सांप अपने शरीर पर से निरर्थक त्वचा (केचुली) को त्याग देता है वैसे ही श्रद्धावान व्यक्ति पाप कर्म को त्याग देता है।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में श्रद्धा का महत्व बताते हुए दर्शाया, श्रद्धा भक्ति से की हुई प्रभु आराधना ही पूरा फल देती है।

**स इज्जनेन स विषा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः।**
**देवानां यः पितरमाविवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम्।।**

ऋग्वेद 2।26।3

"जो भक्त श्रद्धायुक्त मनवाला होकर भक्ति से सूर्यचन्द्रादि तथा विद्वानों के पालक परमेश्वर की पूजा करता है वही उत्तम मनुष्यों से, वह प्रजा से, वह अपने जन्म से, वह अपने पुत्रों से, ज्ञान का सम्पादन करता है, अपने साथियों द्वारा वह पुरूष धन से पूर्ण होता है।" इसी प्रकार का भाव यजुर्वेद में दर्शाया गया

**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।**
**दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्नोति।।**

– यजु. 19/30

अर्थात् – मनुष्य व्रत से दीक्षावान होता है, दीक्षा से दक्षिणावान होता है, दक्षिणा से श्रद्धावान और श्रद्धा से सत्य की और मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्रद्धा क्या है वेद मन्त्र में पुनः बताया गया –

**श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।**
**श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।।**

ऋग्वेद 10/151/1

भावार्थ – श्रद्धा अर्थात् श्रत् नाम सत्य का है उसके धारण की क्रिया और बुद्धि का नाम श्रद्धा है और इस श्रद्धा से ही अग्नि यज्ञ आदि में प्रज्वलित किया जाता है, श्रद्धा के साथ

www.thearyasamaj.org

यज्ञ में हवि दी जाती है, श्रद्धा को सेवनीय प्रत्येक कर्म और पराक्रम अथवा ऐश्वर्य प्रधान स्थान में स्थित कर वाणी से प्रकट करता है।

यह कितना महत्व श्रद्धा के संबंध में बताया गया है। वास्तव में श्रद्धा ही हमें धर्म, ईश्वर और सत्य मार्ग से जोड़ती है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य के सफल जीवन के लिए श्रद्धा एक मूल्यवान धरोहर है। यदि सही अर्थों में श्रद्धा के अनुसार हमारी आस्था बनी तो जीवन में उन्नति है, आनन्द है, प्रगति है, शुभ संकल्पों की पूर्ति है।

किन्तु श्रद्धा के नाम पर आज श्रद्धा के सही अर्थों के विपरीत अन्ध श्रद्धा में मानव जाति अधिक उलझी हुई है। किसी असत्य मान्यता के साथ उचित, अनुचित का विचार किए बिना किसी विचार से जुड़ जाना उसके अनुसार भावना में बहकर कर्म करना जिसमें सत्य न हो, श्रद्धा नहीं है, यह अन्धविश्वास है। ऐसा ही आज समाज में हो रहा है, बिना सोचे समझे धर्म, ईश्वर और सत्य सनातन विचारधारा के विपरीत चल रहे अनेक पाखण्डों में उलझ रहे हैं। जिनसे धोखा भी खा रहे हैं, धन भी लुटा रहे हैं और बाद में पछता भी रहे हैं।

**ध्यान दीजिए श्रद्धा जीवन का अमृत है, और अन्ध श्रद्धा विष के तुल्य है, श्रद्धा धर्म की ओर वहीं अन्ध श्रद्धा पाप की ओर ले जाती है।**

मात्र भावनाओं के कारण या बहुत बड़ी भीड देखकर अथवा चमत्कारों से प्रभावित होकर बिना सत्य असत्य को समझे कोई निर्णय लेना तथा उस अनुसार अपनी आस्था निर्मित कर वैसा कर्म करना ही श्रद्धा नहीं है। जो विचार, जो मान्यताएं सत्य पर आधारित नहीं है तथा केवल भावनाओं के कारण है वह हानिकारक, पाप, पाखण्ड और पतन का कारण बन सकती है क्योंकि उसमें सत्य का अभाव है इसलिए वे श्रद्धा नहीं कही जा सकती। वे अन्ध श्रद्धा है।

श्रद्धा क्या है उससे क्या लाभ है यह समझना जरूरी है। श्रद्धा शब्द श्रत्+द्धा से बना है, सत्य+धारण अर्थात् जो सत्य है उसे धारण करना श्रद्धा है। धर्म पथ सत्य का पथ है,

www.thearyasamaj.org

ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सत्य मार्ग है, जीवन उन्नति का आधार सत्य कर्म है, इनको समझकर आत्मसात करना श्रद्धा कहलाती है। इसीलिए कहा गया है – **श्रद्धया सत्य माप्नये,** श्रद्धा सत्य प्रदान करती है।

अज्ञानता के कारण निर्मित विश्वास से अन्ध श्रद्धा और अन्ध श्रद्धा से सत्य का खण्डन होता है, जैसे अहिन्सा, धर्म का गुण है और हिन्सा पाप कर्म है। चींटी मारना भी पाप है, हिन्सा का कोई भी कर्म कभी भी धर्म नहीं हो सकता सदैव वह पाप कर्म ही कहलाएगा।

किन्तु आज अनेक व्यक्ति सही श्रद्धा के अभाव में अन्धश्रद्धा के कारण मूक निरपराधी पशुओं की हत्या करके देवी देवताओं के नाम पर पशु काटकर बलि चढ़ाने का पाप कर्म करते है और उसे भी धर्म मानते हें। देवी देवताओं पर शराब चढ़ाते हैं, अण्डा मुर्गा चढ़ाते हैं। जबकि ऐसा करना सौ प्रतिशत पाप है किन्तु उसे अन्ध श्रद्धा के कारण धर्म का रूप दे रखा है। क्योंकि  अन्ध श्रद्धा होने से उसमें सत्य ज्ञान का अभाव है।

किसी बीमार व्यक्ति को स्वस्थ होने के लिए औषधि खाना अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु सही गलत की जानकारी न होने के कारण वह औषधि के नाम पर यदि वह नकली दवा खा रहा हो तो वह कभी ठीक होने वाला नहीं है, उसकी बीमारी बढ़ती जावेगी। दवाई का नाम तो सही है जो डॉक्टर ने परची में लिखा है किन्तु जिन वस्तुओं की मात्रा उस दवाई में होना चाहिए वह उसमें नहीं है इसलिए दुकान से मिली दवा का नाम भले ही सही है पर वह नकली है। केवल उसके सही नाम के कारण ही वह दवा असली नहीं हो जाती उसका कोई लाभ नहीं होने वाला है उससे नुकसान ही होगा।

इसी प्रकार श्रद्धा जीवन के लिए महत्वपूर्ण है किन्तु श्रद्धा के जो लक्षण हैं उनका उसमें होना जरूरी है तभी लाभदायक है। श्रद्धा के नाम पर किए जा रहे किसी कार्य में जिनमें श्रद्धा के गुण न हो वह श्रद्धा नहीं है वह अन्ध श्रद्धा है जो हानिकारक है।

www.thearyasamaj.org

आज अन्ध श्रद्धा के कारण अपनी कैसी भी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, रूके हुए कामों को पूर्ण करने के लिए समय से पहले बिना परिश्रम धन प्राप्त करने हेतु ईष्वर प्रसन्न करने, देवी देवताओं को प्रसन्न करने, कर्मों का फल जानने, पुराने पाप कर्मों से मुक्ति पाने, जीवन में खुशियां लाने, बिना कमाए गड़ा धन या किसी अन्य प्रकार से धन प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के पाप कर्म इस श्रद्धा शब्द की आड़ में पनप रहे हैं। देवी देवताओं के नाम पर अण्डा, मुर्गा, बकरा और तो और मानव बलि भी दी जाती है अनेक तांत्रिक श्मशान में मूर्खतापूर्ण हरकतें शराब मांस के द्वारा करते हैं। नर बलि के लिए छोटे–छोटे बच्चों को पकड़ा गया उनकी बलि दे दी। अनेक समाचार हम पढ़ते हैं, सुनते हैं ऐसी कई पाप से पूर्ण घटनाएं घटित हो रही है जो अन्धविश्वास में किए गये पाप कर्म है किन्तु यह सब धर्म मानकर किए जा रहें हैं, दुर्भाग्य से ऐसे नीच कर्मों को भी श्रद्धा कहा जा रहा है।

धार्मिक भावनाओं का लाभ लेते हुए अनेक पाखण्डी आज जनता का शोषण कर रहे हैं और भोली जनता, उनके प्रभाव में परमात्मा की व्यवस्था में विश्वास न करते हुए षब्दों के जाल में फंसकर कुछ हाथ की सफाई से व केमिकल के चमत्कारों को देखकर अन्धविश्वास के दलदल में धंसते जा रही है।

इस अंधश्रद्धा से प्रभावित आज भेड़चाल की तरह बिना सोचे समझे भावुकता के कारण ईष्वर की जगह कई मनुष्यों को भगवान की तरह पूजा जा रहा है। कई स्थानों का महत्व अन्ध श्रद्धा से बढ़ गया जो कई व्यक्तियों का व्यापार बना हुआ है। अन्ध श्रद्धा के कारण बाबा, सन्तों, तान्त्रिकों के बहकावे में आदमी कर्म के स्थान पर जादू टोना, चमत्कार, देवी कृपा में अधिक भरोसा करके अकर्मण्य होते जा रहा है। जीवन बर्बाद् होते जा रहा है। धन सम्पत्ति के साथ, महिलाओं की अस्मिता के साथ भी धोखा हो रहा है। इस प्रकार अन्ध विश्वास से अनेक गलत कार्य हो रहे हैं। निरर्थक कार्यों के प्रति आस्था बढ़ती है जो सत्य ज्ञान पर नहीं होती।

www.thearyasamaj.org

ध्यान रहे, जीवन को उन्नत बनाने व अच्छा पाने के लिए अच्छी विधि अपनान होगी, शुद्ध ज्ञान, षुद्ध कर्म होने से ही परिणाम शुभ हो सकते हैं। मनुष्य द्वारा किए कार्यों का फल देना परमात्मा की व्यवस्था हैं। उसमें संसार की कोई भी शक्ति या सारा संसार मिलकर भी परिवर्तन नहीं कर सकता। इस सत्य पर विश्वास करना चाहिए।

यदि परमात्मा के न्याय में कोई परिवर्तन हो जावे तो वह भी भ्रष्ट अधिकारियों की तरह हो जावेगा अल्प ज्ञान वाला अपना निर्णय बदलने वाला कहलायेगा, उसके बारे में कहा जायेगा कि वह भूल करने वाला या चापलूसी पसन्द है जिसका निर्णय वह  बदल रहा है। फिर उसके निर्णय के अधिकार मनुष्य की इच्छा पर हो जावेगें। परन्तु यह कभी नहीं हो सकता क्योंकि उसका न्याय निष्पक्ष, अटल और सत्य पर आधारित है।

इसलिए अन्धश्रद्धा में, धकेलने के लिए शब्दों के जाल, चमत्कारी भाषा, प्रभावित करने वाली वेशभूषा और उनका प्रचार करने वाले दलालों के चक्कर में न आवें।

प्रत्येक को श्रद्धावान तो होना ही चाहिए। किन्तु जो सत्य है उसे समझ कर ग्रहण करना ही श्रद्धा है और यही लाभकारी है।   योगीराज श्री कृष्ण ने भी श्रद्धा को तीन स्वरूपों में बताया –

**त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभाव जा।**
**सात्विकी, राजसी, चैव तामसी चेतितां श्रृणु।।**

अर्थात् – सत्य असत्य पर विचार करके जो जैसा हो उसे वैसा ही मानना सात्विक श्रद्धा है अपने स्वार्थ ये राग द्वेष से लिप्त आस्था राजसी श्रद्धा तथा बिना विचारे गुण अवगुणों का विचार किए केवल दूसरों को देखकर किया गया कार्य तामसी श्रद्धा है।

इस प्रकार सात्विकी श्रद्धा जो सत्य का प्रतिपादन करती है, वही धर्म पथ पर ले जाती है वही जीवन कल्याण का साधन है। इसके अभाव में जो हम सत्य से परे जिस बात को हम बहुत आस्था के साथ भी मानते है वह अन्ध श्रद्धा है जिससे पाप, पतन का होना निश्चित है। इसलिए श्रद्धा के सही स्वरूप को समझें फिर उस अनुसार जीवन बिताएं अन्ध विश्वास को त्यागें।

www.thearyasamaj.org

# कबीर के कड़वे बोल स्वर्ग से

लोकतन्त्र की लूट है, लूट सके तो लूट।
वर्ना सब चर जायेंगे, नेताओ के ऊँट।।

विधि विधान सब तोड़कर, नेता बने भुजंग।
भारत को गारत करें, देख कबीरा दंग।।

मल्ल–महन्तों के हुए, सभी अखाड़े बन्द।
जमी जमातें नेताओं की, राज करें निर्द्वन्द।।

परमहंस ऋषि ना रहे, है सत्संगों का अन्त।
सत्ता स्वर्ग दिलाते नेता, वही आज के सन्त।।

कबीरा या कलिकाल में, बाबू एक बलाय।
जब तक नोट नहीं मिलें, फाइल रखे दबाय।।

क़बीरा बैठा स्वर्ग में, देख रहा अन्धेर।
प्रभु की पलक फिरी कि सब, हो जावेंगे ढेर।।

– **श्री नरेन्द्र आर्य** "अमरभूषण"
इन्दौर

---000---

***सत्य के ग्रहण करने***

***और***

***असत्य के छोड़ने में***

***सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।***

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

# महाभारत काल के पश्चात प्राचीन विमान विद्या के प्रथम संशोधक श्री शिवकर बापूजी तलपदे

यह पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि विमान के निर्माता के नाम से पहचाने जाने वाले राईट्स बन्धू से पूर्व वेदों में उल्लेखित ज्ञान के आधार पर 1895 में वायुयान बनाकर उसका प्रयोग करने वाले कोई विदेशी विद्वान नहीं बल्कि स्वदेशी माटी में जन्में श्री शिवकर बापूजी तलपदे हैं।

प्राच्य विमान विद्या संशोधक श्री शिवकर बापूजी तलपदे का जन्म ईस्वी सन् 1864 में हुआ था। महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध और सर्वोत्कृष्ट चित्रशाला जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई में आप चित्रकला के शिक्षक थे। इसी अध्यापकीय जीवन काल में आपने वेदादिक प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के आधार पर आधुनिक युगीन प्रथम विमान बनाने का प्रारंभिक प्रयोग किया था जिस समय आप यहां शिक्षक थे, तो उसी समय श्रीपाद दामोदर सातलेकर ने उक्त स्कूल में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश किया था वे तलपदे जी से केवल तीन वर्ष छोटे थे। संभव है इन दोनों वैदिक विद्वानों ने विमान बनाने के सिलसिले में एकाधिक बार विचार विमर्श किया हो। श्री तलपदे जी ने "योगशास्त्र का भूतर्थ दर्शन, गुरूमंत्र महिमा और प्राचीन विमान कला नाम तीन ग्रंथों की रचना की थी। उनके शास्त्र अध्यायन और अध्यवसाय को देखकर कोल्हापुर (करवीर) के श्रीमत् शंकराचार्य जी ने उन्हें "विद्या प्रकाश प्रदीप" नामक उपाधि से विभूषित किया था।

सन् 1895 में चौपाटी पर जो विमान उड़ाने का सफल प्रदर्षन किया गया था, उसके निर्माण में श्रीमती तलपदे जी के अतिरिक्त मुम्बई के पब्लिक वर्क्स विभाग के वास्तुशास्त्रविद् श्री पिटकरे का भी उल्लेखनीय सहयोग था, तलपदे जी ने इस स्वनिर्मित विमान का नाम **"मरूतसखा"** रखा था। परीक्षण पर कुछ सफलता मिली किन्तु पूर्ण सफलता के लिए काफी धन की आवश्यकता थी किन्तु तत्कालीन शासक और शासित

www.thearyasamaj.org

द्वारा यथोचित प्रोत्साहन और समुचित सुविधा न मिल पाने के कारण 1895 के बाद आप विमान विद्या के क्षेत्र में और अधिक प्रगति नहीं कर पाये। संभवतः अंग्रेज शासकों को यह पसंद नहीं था कि यूरोपीय वैज्ञानिकों से पहले भारतीय वैज्ञानिकों को विमानविद्या संशोधक का श्रेय मिले। आपने सन् 1904 से 1909 तक मराठी में "आर्यधर्म" मासिक का भी संपादन किया। आप मुम्बई के चीरा बाजार में स्थित "डुकरवाड़ी" में रहते थे। प्राच्य विमान विद्या संशोधक के साथ–साथ आप एक आर्टिस्ट और फोटोग्राफर के रूप में भी प्रसिद्ध थे।

सन् 1904 में आपने अपने फोटोग्राफिक स्टूडियो को वेदधर्म प्रचारिणी सभा का कार्यालय भी बना दिया था। यथोपलब्ध विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती विनिर्मित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाशादि, साहित्य को पढ़कर किया शामराव कृष्ण आणि मंडली तथा वेदधर्म प्रचारिणी सभा के संपर्क में आकर अथवा पं. चिरंजीलाल वर्मा, पं. बालकृष्ण जी शर्मा और स्वामी नित्यानन्दजी के सानिध्य में रहकर आप सन् 1885 के आसपास स्वामी दयानन्द और वेदोक्त आर्यधर्म के सर्वात्मभाव से अनुयायी बन गये थे और आर्य समाज के सम्पर्क में आने के दस वर्ष बाद ही आपने मुम्बई की चौपाटी पर हजारों लोगों की उपस्थिति में आकाश में विमान उड़ाने का यशस्वी प्रयोग किया था।

इस समय तक विमान विद्या संशोधन के क्षेत्र में यूरोप और अमेरिका को भी सफलता प्राप्त न हो पायी थी। राईट बन्धू, काउंट झेपलिन के नाम अभी तक दुनिया के सामने नहीं आये थे। ऐसे समय में एक आर्य समाजी वैदिक विद्वान द्वारा किया गया प्रयोग वस्तुतः अभिनन्दन और स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय है "विशेष बात यह थी कि इस प्रयोग की कल्पना और इसकी समस्त साहित्य सामग्री पूर्णतः स्वदेशी थी। पाश्चात्य जगत में वह उधार रूप में बिल्कुल भी नहीं ली गई थी।

**षिवकर बापू तलपदे और आर्य समाज :**

"विज्ञान कथा" के लेखक प्रहलाद नारायण जोशी के

www.thearyasamaj.org

प्राच्य विमान विद्या संशोधक : शिवकर बापू जी तलपदे

अनुसार श्री तलपदे आर्य समाज के अनुयायी थे इसलिए वैदिक वाड़मय के विषय में उनके अन्तःकरण में विशेष प्रीति थी। "अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक के लेखक प्रा. भालवा केलकर के अनुसार भी तलपदे आर्य समाज के अनुयायी थे और उनकी यह श्रद्धा थी कि प्रगत ज्ञान–विज्ञान वैदिक साहित्य में परिपूर्ण रूपेण संचित और समाविष्ट है।

1. आर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक : भाग 2, प्रा. भलवा केलकर पृ. 13

2. जोशी जी के अनुसार ऋग्वेद के दसवें मंडल के 190 वें मंत्र पर महर्षि भारद्वाज ने जो टीका को है, उसके आधार पर श्री तलपदे ने यह विमान बनाया था।

द्रष्टव्य – विज्ञान कथा (मरूत्सखाचे उड्डाण) पृ. 32

3. अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक – पृ. 10

आधुनिक युग के अप्रतिम वैदिक विद्वान स्वामी दयानन्दजी ने तलपदे जी की कर्मभूमि मुम्बई की कुल पांच बार यात्रा की थी। स्वामीजी विरचित् "ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका" का प्रकाशन मई 1877 में हुआ था, जिसका एक अध्याय विमान विद्या से संबंधित है।

स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखे गये ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के नौ–विमानादि प्रकरण के सन्दर्भ में "बहुत से लोगों का यह कहना है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाश्चात्य वैज्ञानिक उन्नति को देखकर वेद से भी उन्हीं बातों को दिखाने का प्रयत्न किया है," पर महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक के कथानुसार – "वस्तुतः यह कथन ठीक नहीं है, क्योंकि पाश्चात्य देशों में सन् 1901 में विमान की प्रथम उड़ान हुई थी, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1876–77 में यह पुस्तक लिखी थी। स्वामीजी ने जो कुछ लिखा है वह भारतीय वाड़मय के आधार पर ही लिखा है। रामायण,

www.thearyasamaj.org

महाभारत और अन्य संस्कृत ग्रंथों (3) में विमान का वर्णन भरा पड़ा है। राजा भोज के समराड़्ण–सूत्रधार ग्रंथ लेखक प्रा. भालवा केलकर के अनुसार भी तलपदे आर्य समाज के अनुयायी थे और उनकी यह श्रद्धा थी कि (11 वीं सदी) में विमान बनाने का संक्षेप में वर्णन मिलता है।"

जैसी आपत्ति स्वामी दयानन्द की विमान विद्या के प्रकरण के विषय में उठायी गई है, वैसे ही या उससे मिलती–जुलती आपत्ति तलपदे जी द्वारा प्रस्तुत प्राचीन विमान कला के सन्दर्भ में लोगों द्वारा उठायी जा सकती है। वे यह भी कह सकते हैं कि उनका विमान विद्या विषय ज्ञान तो विदेशियों के ही माध्यम से अपने तक पहुंचा है पर उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि विमान अविष्कारक के रूप में राईट बन्धुओं के सुप्रसिद्ध होने से भी पांच वर्ष पूर्व **न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे और बड़ोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ की उपस्थिति में तलपदे जी ने पूर्ण स्वदेशी उपकरणों के आधार पर मुम्बई में विमानोड्डान का सफल प्रदर्शन किया था।** यह ऐतिहासिक तथ्य प्रबल प्रमाण है। क्रमशः.............

लेखक – **दिवंगत डॉ. कुशलदेव जी**

सौजन्य से – **इन्द्रजित देव**

यमुना नगर, हरियाणा

---

## थोड़ा हंसिए भी

0 एक पागल दूसरे पागल से – तुम किस दिन पैदा हुए थे ? दूसरा पागल – रविवार को।
पहला पागल – तुम मुझे पागल बना रहे हो, रविवार को तो छुट्टी होती है।

0 जेलर – तुम किस जुर्म में आये हो ?
कैदी – कुछ खास नहीं साहब, बस सरकार से कॉम्पीटिशन हो गया था।
जेलर – किस बात का ? कैदी – नोट छापने का।

www.thearyasamaj.org

## जिन्दगी

जिन्दगी का बड़ा अजीब हाल है,
हर पल उठता इस पर सवाल है।
जिन्दगी के रंग बड़े निराले हैं,
कहीं अमृत तो कहीं जहर के प्याले हैं।

गिरना, उठना फिर चलना,
जिन्दगी की निशानी है।
हर कदम पर बदलाव,
कहीं खुशी तो कहीं परेशानी हैं।

है कभी समतल सपाट जमीन,
तो कहीं ऊंच नींच पहाड़ी सी बनी।
कहीं विरान मरूस्थल तो,
कहीं घनघोर जंगलों से घनी।

कही कांटें ही कांटें हैं,
तो कहीं फूल खिलते हैं।
कहीं जनम–जनम की दूरी,
तो कहीं बिछड़े मिलते हैं।

कभी चिलचिलाती मांघ सी धूप भी है,
तो कहीं सावन सी हरियाली।
कहीं चट्टानी रास्ता पड़ता है,
तो कहीं मीलों जगह खाली।

कभी सूखा जिन्दगी से खेलता,
कहीं कहर होता पानी का।
कहीं बुढ़ापा बना अभिशॉप,
तो कहीं दुःख जवानी का।

www.thearyasamaj.org

पर ये सब जीवन की धूप–छांव है,
जो आती और जाती है।
कभी अपार खुशी मिली,
तो कभी वो तरसाती है।

पर, हर हाल में जिन्दगी का,
अस्तित्व कायम रहता है।
ना समझ आदमी ही,
व्यर्थ में डरता है।

चलते रहना, बढ़ते रहना ही,
जिन्दगी का दस्तूर है।
जो बैठ गया थककर,
वो मंजिल से दूर है।

इसलिए बाधाएं कुचलते हुए बढ़ते रहना,
जीवन की सफलता है,
हौंसले बुलन्द हो जिसके,
उसे कौन रोक सकता हैं।

कर्मवीरों का ही सदा,
ऊंचा रहा भाल है।
जिन्दगी का बड़ा, अजीब हाल है,
हर पल उठते इस पर सवाल हैं।

— प्रकाश आर्य, महू

---

**सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।**

— महर्षि दयानन्द

www.thearyasamaj.org



# ईश्वर कहॉ मिलेगा ?

**तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।**

**तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।**

यजुर्वेद 40/5

ईश्वर कहॉ रहता है, कहां जाकर उसे प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रयास व खोज में ही मनुष्य का सारा जीवन निकलते जा रहा है। जिसने जहां बता दिया वहीं जाकर ईष्वर प्राप्त करने पहुंच गए। वहां जाकर ईश्वर के नाम पर बनी किसी प्रतिमा को देखकर यह मान लिया कि अमुक देवता के दर्शन कर लिए। यदि प्रतिमा के दर्शन ही करना था, उसे ही ईश्वर दर्शन मानना था तो अपने घर पर गांव में, शहर में कहीं भी वैसी प्रतिमा के दर्शन कर सकते थे फिर वहां जाने की आवश्यकता क्यों ?

ईश्वर और उसकी मूर्ति दोनों अलग–अलग हैं। जैसे किसी व्यक्ति से आप मिलने गए वह व्यक्ति उस समय घर पर नहीं है किन्तु उनका बढ़िया चित्र टंगा है, या उसकी पत्थर से बनी एक प्रतिमा भी उसके घर के आंगन में लगा रखी है। व्यक्ति नहीं हैं क्या उसके चित्र या प्रतिमा को देखकर यह कह सकते हैं कि हम व्यक्ति से मिल आये ? नहीं कह सकते।

प्रतिमा या चित्र वह नहीं है, हो उसके स्थान पर या उसके जैसा बनाया या है जो नकल हैं। नकल तो नकल है वह असल नहीं हो सकता। नकल की आवश्यकता या महत्व उस समय होती है जब असल नहीं हो, गुम गया हो, समाप्त हो गया हो, अस्तित्व में नहीं हो। यही सिद्धान्त ईश्वर पर भी लागू कर दिया जबकि ईश्वर तो सदा है फिर उसकी नकल की क्या जरूरत ?

आज हमने ईश्वर के स्थान पर उसकी नकल तैयार कर दी। हमने एक ही भगवान की करोड़ों मूर्ति बनाई उसमें से भी कुछ स्थान की मूर्ति को बड़ी पावर वाली, बड़ी चमत्कारी बना दी बाकी को साधारण। यह योग्यता का विभाजन भी हमने कर दिया। जो ईश्वर दुनिया बनाता है उसे हमने निर्मित कर दिया और उसमें भी सबसे श्रेष्ठ कौन है यह भी हमने निश्चित कर दिया।

www.thearyasamaj.org

यहां एक विचार करिए ईश्वर यदि है, हम उसका सदा होना मानते हैं, तो फिर सीधे–सीधे उससे क्यों नहीं मिलते ? जबकि कहा जाता है कि वह तो घट–घट (हर हृदय) में, कण–कण में रहता है, सदा रहता है, सब जगह रहता है, फिर उससे क्यों नहीं मिल सकते ?

एक बूढ़ी मॉ थी वह बहुंत देरे से गांव की सड़क पर किसी वस्तु को जमीन पर ढूंढ़ रही थी। कुछ व्यक्तियों ने देखा अम्मा बड़ी देर से कुछ ढूंढ़ रही है चलो पूछकर इसकी मदद करते हैं।

जाकर पूछा मॉ क्या ढूंढ़ रही हो ? बोली बेटा, सूई ढूंढ़ रही हूं। काफी देर तक आये हुए व्यक्ति उसकी मदद करते हुए वहां सूई ढूंढ़ रही हूं। काफी देर तक आये हुए व्यक्ति भी उसकी मदद करते हुए वहां सूई ढूंढ़ने लगे। जब बहुत देर हो गई सूई नहीं मिली तो पूछा, अम्मा जरा याद करो वह सूई गिरी कहॉ थी। बुढ़िया ने याद करते हुए कहा बेटा, वह गिरी तो कुटिया में थी। मददगार सिर पर हाथ रखकर बोले, अरे अम्मा हमारा टाईम भी खराब किया, अरे जहां गिरी थी वहां ढूंढ़े तो मिल जावेगी।

कहानी उस बुढ़िया की नहीं उन भोले लोगों की है जो ईश्वर को अपने से बाहर ढूंढ़ने का निरर्थक प्रयास कर रहे हैं। उस परमात्मा के रहने का स्थान बताते हुए योगीराज कृष्ण ने कहा – **"ईश्वर सर्वन्भूतानां हृदये अर्जुन तिष्ठति"** अर्थात वह ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में रहता है।

परमात्मा की वाणी वेद में कहा गया **"स ओतः प्रोचश्च विभू प्रजासु" "यजुर्वेद"** वह परमात्मा सर्वव्यापक, प्रजा के आस पास ही रहता है। पुनः कहा – **"वेनस्तत्पश्यन्त निहितं गुहाः" यजुर्वेद**

विद्वान लोग उसे आत्मा में ही देखते हैं।

हम परमात्मा को ढूंढ़ने कहां जा रहे हैं, कहां उसका स्थान बता रहे हैं यही हमें पता नहीं है। जो हर जगह है उसे ढूंढ़ना तो अज्ञानता है सन्त तुलसीदास कहते हैं **"हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रकट होई मैं जाना"**

www.thearyasamaj.org

जगतगुरू शंकरचार्य ने उन लोगों के लिए जो ईश्वर को अपने हृदय को छोड़कर इधर–उधर ढूंढ़ते हैं उनके लिए कहा & **स्वगृहे पायसं त्यक्ता भिक्षामिच्छन्ति दुर्मते**" अर्थात् जो व्यक्ति ईश्वर को अपने हृदय के और कहीं देखते हैं उनकी स्थिति उस व्यक्ति जैसी है जो अपने घर में बनी खीर को छोड़कर भीक्षा मांगने दूसरों के द्वार जाता है ऐसा व्यक्ति तो दुर्मति है।

ईश्वर के संबंध में उपरोक्त विद्वानों, महापुरूषों के अतिरिक्त इस प्रकार की चर्चा, आचार्य मनु, चाणक्य, नानकदेवजी, सन्त कबीर, दादू, तुकडूदासजी, सन्त तुकाराम, व सन्त रैदास आदि अनेक व्यक्तियों ने की है। उन सबको हमने पढ़ा किन्तु उस पर विचार नहीं किया।

लेख के प्रारंभ में वेद मन्त्र लिखा है उसका अर्थ परमात्मा के संबंध में स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है। अर्थ है – वह प्रभु गति करता है। गति नहीं भी करता है, वह दूर से दूर है और समीप से समीप भी है, वह प्रभु समस्त ब्रह्माण्ड के अन्दर है और वह सब जगत के बाहर भी है।

उपरोक्त वेद मन्त्र यह स्पष्ट करता है कि ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां वह ईश्वर नहीं रहता हो। पुनः विचार करना चाहिए जो ईश्वर हमारे हृदय में है जो सब जगह हो उसे ढूंढ़ने कहीं जाना पड़ेगा ? ईश्वर के लिए यह सोच ठीक वैसा ही है जैसे मौसंबी, सन्तरा, आम जो रस से भरा हुआ है किन्तु हम इस भ्रम में हैं कि इसे किधर से कांटें जिससे हमें रस मिले ?

यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया "**ईशा वास्यमिदं सर्वम्**" यह सारा जगत ईश्वर से आच्छादित है अर्थात् उसके अन्दर ही सब जगत है। जिसने हमें चारों ओर से घेर रखा है हमारे चारों ओर है उसे ही ढूंढ़ना पड़े तो यह आश्चर्य है।

इसलिए परमपिता परमात्मा जो हमारी मॉ, पिता, भाई, सखा सब कुछ है वह कभी हमसे दूर नहीं है वह सदा हमारे पास है, हमारे साथ है। उस सच्चे देव के दर्शन अपने मन मन्दिर में हम कर सकते हैं। किसी शायर ने ठीक ही लिखा–

www.thearyasamaj.org

दिल के आइने में है तस्वीरे यार।
गर्दन झुकाई और देख ली।

अज्ञानता के कारण कस्तूरी की सुगन्ध से आकर्षित हिरण भूखा–प्यासा भटकता हुआ कस्तूरी ढूंढ़ता है किन्तु उसे यह ज्ञान नहीं होता कि जिसे वह ढूंढ रहा है वह तो उसकी नाभि में ही है।

यही स्थिति उस व्यक्ति की है जो ईश्वर को अपने हृदय में देखने के बजाय इधर–उधर देखने का प्रयास करता है। ईश्वर की हमसे स्थान की या समय की दूरी नहीं है, उसकी हमसे अज्ञानता के कारण दूरी बनी हुई है। इस अज्ञानता की दीवार को हटा दो, ऑखों के द्वारा उसके दर्शन करने की जगह ज्ञान चक्षुओं से उसकी अनुभूति कर उसका समीप्य प्राप्त करें। यही विचार हमें उसके निकट ले जावेगें अन्यथा जिन्दगी भर भटकाव ही रहेगा। कुछ ऐसे –

गंवा दी उमर पूरी तुझे पाने में।
ढूँढ़ता फिरा, सारे जमाने में।।
जाने कितने उपवास, व्रत कर डाले।
घूमे जाने कितने मन्दिर, और शिवाले।।
तीरथ स्नान जिन्दगी भर, करता रहा।
शरीर को तपा, धूप सर्दी सहता रहा।।
नाम से तेरे लुटता रहा, ठेकेदारों से।
चढ़ावा चढ़ाता रहा, वहॉ मैं हजारों से।।
पर, तू तो दाता है, सबका भण्डार तू।
देवता तू और पालन हार तू ।।
ये सब बाहर की ऑखों ने करवाया।
ज्ञान चक्षु का, ख्याल ही नहीं आया।।

www.thearyasamaj.org

ढूँढ़ना था जहाँ बस वहीं ढूँढ़ा नहीं तुझे।
भटका दिया, उलझा दिया जमाने ने मुझे।।
पहले ही अगर मन–मंदिर में तुझे देखा होता।
तो तेरे नाम पर नहीं होता ये कोई धोखा।।

**– प्रकाश आर्य, महू**

# गाय की रक्षा कैसे हो ?

हमारी आर्थिक और आध्यात्मिक आस्था की उपयोगी गौ जिसे हम माता पुकारते हैं, वह आज बूचड़ खाने में नित्य हजारों की संख्या में काटी जा रही है।

**गौ माता के चित्र की पूजा रोज करते हैं, नित्य उसकी जय बोलते हैं, पर उसकी रक्षा का विचार नहीं करते।**

गाय रक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है, धर्म है।

इसलिए गौ वंश पालन और गौ दूध का सेवन करें। गौ दूध अमृत है, औषधि है, स्वास्थ्य वर्धक है।

इसलिए गाय के दूध, घी, दही, मक्खन का उपयोग करें, उसकी उपयोगिता समझें तभी गौ रक्षा होगी।

महर्षि के प्रेरक प्रसंग –

## निर्भयता की पराकाष्ठा

एक दिन श्री स्वामी जी गंगा में स्नान कर रहे थे। आधा तन जल से बाहर था उनसे थोड़ी ही दूर जल में एक बड़ा मगर निकल आया आपके एक साथी ने शोर मचाया और भागा कि एक बहुत बड़ा मगरमच्छ निकला है परन्तु स्वामीजी जिस स्थिति में थे, उसी में ही पड़े रहे। उनके मुखमण्डल पर तनिक भी भय आदि के चिन्ह नहीं थे। आपने कहा "जब हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ते तो वह भी हमें कुछ नहीं कहेगा।" मगरमच्छ पास से निकल गया।

www.thearyasamaj.org

## आर्य समाज महू के द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रतिदिन यज्ञ प्रातः 6 से 7 तथा सायं 6 से 7 तथा प्रत्येक रविवार प्रातः 8.30 से 10.30 बजे सत्संग, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन होता है। कृपया पधारें।

## निःशुल्क योग, प्राणायाम कक्षा

प्रातः 6 से 7 बजे

प्रशिक्षक – इन्दरसिंह, पातंजलि योगपीठ द्वारा

## लॉयन्स सेवालय

**प्रति रविवार प्रातः १०.०० से १२.०० बजे**

**टीकाकरण एवं पोलियो की दवाई निःशुल्क पिलाई जाती है**

**वैदिक एवं राष्ट्रीय पर्वों पर, विशेष कार्यक्रम**

बुक-पोस्ट

श्रीमान् ________________________

________________________

________________________

सम्पादक, प्रकाशक द्वारा मुद्रक : **प्रकाश आर्य** कृतें आर्य सेवा संघ, महू के लिये चौधरी प्रिंटर्स, महू से मुद्रित व प्रकाशित, संपादक मंडल : रामलाल शास्त्री, विद्याभास्कर आचार्य संजय देव, कुमारी निधि शर्मा, आर्य समाज, महू